संस्थापित १८६७ ई०

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२३ ● अंक २१ ● २२ मई २०१८ ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष अष्टमी संवत् २०७५ ● दयानन्दाब्द १६४ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

नमस्ते कहाँ से चली?

डॉ0 धीरज सिंह आर्य, सभा प्रधान

प्रश्न– यह नमस्ते कहां से चली और इसका अर्थ क्या है?

उत्तर– सृष्टि के आदि से लेकर महाभारत पर्यन्त सब मनुष्य परस्पर में नमस्ते ही करते थे। उनके पश्चात् जब अनेक मत मतान्तर और अनेक मजहब दुनियां में फैले, तो उन सबने अलग–अलग शब्द नियत किये। किसी ने 'गुड मार्निंग' 'गुड नाइट' गुडवाई किसी ने 'अस्लाम अलैकुल' 'वालेकम सलाम' 'अबाद अर्ज' आदि–आदि अनेक शब्द विधर्मियों और विदेशियों ने कल्पित किए। जै शिव, जै हरी, जय गोविन्द, जय राधेयाम, जै राम जी, जै कृष्ण जी, प्रणाम, जुहार आदि अनेक प्रयोग जारी किये।

महाभारत से पहले भू–मण्डल पर आर्य लोगों का अखण्ड राज्य था लोग वैदिक धर्मी थे। परस्पर में नमस्ते ही किया करते थे। अब ऋषि दयानन्द की कृपा से लोग प्राचीन वैदिक सिद्धान्त को पुनः समझने लग गये हैं और परस्पर में नमस्ते करने लगे हैं। नमस्ते का अर्थ है– मैं तुम्हारा मान्य करता करता हूँ, आदर करता हूँ।

प्रश्न–क्या वेदों में नमस्ते करना लिखा है? और जै रामजी की, जै श्री कृष्ण की करने में नुकसान ही क्या है?

उत्तर– वेदों में ही क्य बाल्मीकि रामायण, महाभारत, उपनिषद, गीता आदि समस्त ग्रन्थों में नमस्ते ही लिखा हुआ मिलता है। कहीं भी जै राम जी, जै कृष्णजी की, जय शिव की आदि–आदि लिखा हुआ नहीं मिलता। राम और कृष्ण स्वयं नमस्ते करते थे, क्योंकि वे सब वैदिक–धर्मी थे। अगर तुमसे कोई यह पूछे कि राम और कृष्ण के उत्पन्न होने से पहले लोग क्या करते थे तो इसका उत्तर क्या दे सकते हो? राम को उत्पन्न हुए लगभग १० लाख वर्ष हुए और कृष्ण को उत्पन्न हुए लगभग ५ हजार वर्ष हुए। सृष्टि तो इससे पहले की है। सृष्टि को उत्पन्न हुए तो करीब–करीब २ अरब वर्ष हुए हैं। तुम्हारा यह कहना कि जै रामजी की, जै कृष्णजी की कहने में नुकसान ही क्या है? नुकसान एक नहीं अनेक हैं। प्रथम तो लोगों में साम्प्रदायिक भावना जागृत होती है। प्रथम तो लोगों में साम्प्रदायिक भावना जागृत होती है। दूसरे इन प्रयोगों में परस्पर के सम्मान की कोई भावना नहीं। मानव समाज में तो कोई उम्र में बराबर। जब परस्पर में एक दूसरे से मिलना हो तो एक दूसरे के प्रति आदर और सम्मान का भाव प्रकट करना मनुष्यता और सभ्यता का चिन्ह है। ऐसा न करके जै राम जी की, जय कृष्ण जी की, या जै शिव की करना शोभास्पद प्रतीत नहीं होता। फर्ज करो तुम्हें अपनी नानी, मामी या बुआ, फूफा के दर्शन हुए और उस समय उन सबसे तुमने 'जयरामजी की' या 'जय कृष्णजी की' कहा, तो ऐसा कहने में तुमने उनके सम्मान में क्या शब्द कहे? क्यों

जय रामजी की बोलने में राम जी की जय और जय श्रीकृष्ण जी बोलने में कृष्ण की जय हुई। उनके आदर और सम्मान में तो कुछ न हुआ। 'नमस्ते' कहने से यह बात निकली 'मैं तुम्हारा मान करता हूं। 'मैं तुम्हारा आदर करता हूँ।' आदर हर एक का करना चाहिए छोटों का छोटा जैसा, बड़ों का बड़ा जैसा। बच्चे का भी आदर है, और बड़े का भी आदर है, माता–पिता का भी आदर है, पुत्र–पुत्री का भी आदर है।

प्रश्न–राम की जय और कृष्ण की जय बोलने में राम और कृष्ण का नाम जुबान पर आता है?

उत्तर– नाम तो आता है पर क्या ये जरूरी है कि एक दूसरे के सम्मान के समय भी जय रामजी की और जय कृष्ण जी की कहा जाये? क्या हर समय हर एक शब्द का बोलना उचित होता है? समय पर राम की और कृष्ण की जय बोलना भी अच्छा प्रतीत हो सकता है? जहां राम और कृष्ण का चरित्र वर्णन किया जा रहा हो, वहां कंस और रावण के मुकाबले पर राम–कृष्ण का चरित्र वर्णन किया जा रहा हो, वहां कंस और रावण के मुकाबले पर राम–कृष्ण की जय बोलना अत्यन्त सुन्दर और शोभायमान प्रतीत होता है।

सारी भावनायें 'नमस्ते' शब्द में मौजूद हैं। परन्तु इन समस्त भावनाओं की मन्शा एक ही है–प्रत्येक का आदर, प्रत्येक का सत्कार जैसे श्रद्धा, स्नेह, प्रणय, आदि शब्द प्रेम के ही दूसरे रूप हैं, इसी प्रकार आदर, आशीर्वाद प्रेम आदि भी नमस्ते के दूसरे रूप हैं।

दूसरा व्यक्ति– मित्र, आपने यह शंका निवारण कर दी, इसके लिए धन्यवाद!

साभार : "दो मित्रों की बातें" (आचार्य प्रेमभिक्षु)

–साभार

ओ३म्
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
के तत्वावधान में
स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी के सान्निध्य में

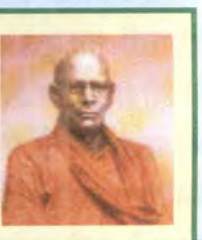

दिनांक ०८, ०९, १०, ११ जून २०१८ दिन- शुक्रवार, शनिवार, रविवार, सोमवार तक "बृहद् योग शिविर का आयोजन" किया जा रहा है जिसमें आप सादर आमंत्रित हैं कृपया ईष्ट मित्रों सहित शिविर में भाग लेकर योग, भजन प्रवचन का लाभ उठायें।

स्थान- महात्मानारायण स्वामी आश्रम, रामगढ़ तल्ला, नैनीताल (उ०ख०)

डा. धीरज सिंह
प्रधान

अरविन्द कुमार
कोषाध्यक्ष

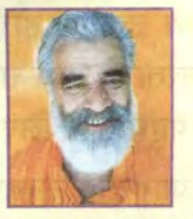
धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

कब तक गिरते रहेंगे निर्माणाधीन पुल, मरते रहेंगे लोग?

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संसदीय क्षेत्र वाराणसी में निर्माणाधीन फ्लाई ओरवर का एक हिस्सा गिरने से साफ पता चलता है कि शासन एवं प्रशासन में अतीत में हुए ऐसी घटनाओं से कोई सबक नहीं सीखा। काश सबक सीखकर सावधानी बरती गयी होती तो आज वे परिवार अनाथ न होते जिनकी मौत इस हादसे में हुई है। इस फ्लाईओर में कई महीने से काम चल रहा था। इसका एक हिस्सा एकाएक अचानक नीचे गिर गया। इस हादसे के चपेट में आये तकरीबन ५० लोग और कई गाड़ियां कंकरीट मलवे के नीचे दब गये।

जब तक बाहर निकाला गया कई लोगों की सांसे सदा सदा के लिए थम चुकी थी। शहर के भीड़ वाले इलाके में, जहां अक्सर जाम लगा रहता है। इस हादसे के बाद कैसी अफरातफरी मची होगी यह सोचकर हमारे रोंगटे खडे हो जाते हैं। यह बात अच्छी है कि राष्ट्रीय आपदा राहत दल की टीम ने फौरन पहुंच कर जिस त्वरित गति से राहत कार्य को अंजाम देना शुरू किया उसे कई घायलों को समय रहते स्वास्थ सुविधा मुहैया कराई जा सकी।

हमें यह सीख मिलती है कि बड़े निर्माण के दौरान आम जन की सुरक्षा को लेकर अक्सर लापरवाही बरती जाती है। दिल्ली में मेट्रो लाइन निर्माण के दौरान या लखनऊ में मेट्रो रूट के निर्माण के दौरान संबंधित रूट को सुरक्षा घेरे से भेद दिया जाता रहा है। इससे नियमित यातायात प्रभावित न होकर लोगों को खास परेसानी भी नहीं होती। इसके बावजूद वहां भी मेट्रो के निर्माधीन पुलों का हिस्सा गिरने के हादसे हो चुके हैं। पूर्व में इस तरह के हादसे गुडगांव व गाजियाबाद में हम सबने देखा है। जब निर्माधीन पुल के हिस्से गिर गये थे।

२०१४ में कोलकाता में एक निर्माणाधीन फ्लाईओवर के ढहने से २० लोगों की जान चली गयी थी। अब हम वाराणसी में मंगलवार को हुए हादसे पर गौर करें तो साफ पता चलता है कि इससे बड़ा आपराधिक लापरवाही का दूसरा कोई मामला नहीं हो सकता है। बात दें कि प्रशासन ने इस जगह पर सावधानी बरती होती तो, यह हादसा टाला जा सकता था। वास्तव में उस इलाके में कई वर्ष पूर्व जाम की समस्या से निजात दिलाने के लिए फ्लाईओवर बनाया गया था। और तभी दूरदर्शिता का परिचय दिया गया होता तो इस फ्लाईओवर के विस्तार करने की जरूरत ही नहीं महसूस होती। हैरानी इस बात की है इस फ्लाई ओर के निर्माण के दौरान जब भारी भरकम कंकरीट के मलवे वहां लाये जा रहे थे। तो भी प्रशासन ने प्रकाशन क्यों नहीं बरता। वहां से गुजरने वाले यातायात का रूट डायवर्जन क्यों नहीं किया गया। ऐसा किया जाता तो यहां से गुजरने वाले हादसे का शिकार हुए वाहन व मरने वाले लोग बच जाते।

यह एक ऐसी लापरवाही है जिसे नजर अंदाज किया जाना जनहित के खिलाफ होगा। हलाकि प्रदेश की योगी सरकार ने जांच के लिए एसआईटी गठित करने की घोषणा की है। वाराणसी के कलेक्टर ने भी मजिस्ट्रेटी जांच के आदेश दे दिये है। उम्मीद की जाती है जांच में सही तथ्य उजागर होंगे एवं दोषियों को सजा दिलाने के लिए सरकार पूरी तत्परता के साथ सख्ती करेगी। इस घटना के गुनहगारों को सलाखों के पीछे पहुंचाने के लिए एफआईआर भी दर्ज कर ली है।

जागरूक जनता की पैनी निगाह इस बात पर टिकी है कि हमेशा की तरह हादसे के बाद होने वाली जांच और उसका परिणाम क्या होता है पर बदले हालत में हम उम्मीद करते है इस हादसे के दोषियों को योगी सरकार किसी भी कीमत पर बक्सने वाली नहीं है। सरकार की यह मंशा धरातल पर उतरी तो कार्रवाई नजीर बन जायेगी।

→ सम्पादक

गतांक से आगे .....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ षष्ठ समुल्लासारम्भः

अथ राजधर्मान् वक्ष्यामः

यथा फलेन युज्येत राजा कर्त्ता च कर्मणाम्। तथाऽवेक्ष्य नृपो राष्ट्र कल्पयेत् सततं करान्।।१।।
यथाल्पाऽल्पमदन्त्याद्यं वार्य्योकोवत्सषट्पदाः। तथाऽल्पाऽल्पो ग्रहीतव्यो राष्ट्राद्राजाब्दिकः करः।।२।।
नोच्छिन्द्यादात्मनो मूलं परेषां चातितृष्णया। उच्छिन्दन् ह्यात्मनो मूलमात्मानं तांश्च पीडयेत्।।३।।
तीक्ष्णश्चैव मृदुश्च स्यात्कार्यं वीक्ष्य महीपतिः। तीक्ष्णश्चैव मृदुश्चैव राजा भवति सम्मतः।।४।।
एवं सर्वं विधायेदम् इतिकर्त्तव्यम् आत्मनः। युक्तश्चैवाप्रमत्तश्च परिरक्षेदिमाः प्रजाः।।५।।
विक्रोशन्त्ये यस्य राष्ट्रद् ध्रियन्ते दस्युभिः प्रजाः। सम्पश्यतः सभृत्यस्य मृतः स न तु जीवति।।६।।
क्षत्रियस्य परो धर्मः प्रजानामेव पालनम्। निर्दिष्टफलभौता हि राजा धर्मेण युज्यते।।७।। मनु०।।

जैसे राजा और कर्मों का कर्त्ता राजपुरूष वा प्रजाजन सुखरूप फल से युक्त होवे वैसे विचार करके राजा तथा राजसभा राज्य में कर स्थापन करे।।१।।

जैसे जोंक बछड़ा और भमरा थोड़े-थोड़े भोग्य पदार्थ को (ग्रहण करते हैं वैसे राजा प्रजा से थोड़ा-थोड़ा वार्षिक कर लेवे।।२।।

अति लोभ से अपने, दूसरों के सुख के मूल को उच्छिन्न अर्थात् नष्ट कदापि न करे क्योंकि जो व्यवहार और सुख मूल का छेदन करता है वह अपने और उनको पीड़ा ही देता है।।३।।

जो महीपति कार्य को देख के तीक्ष्ण और कोमल भी होवे वह दुष्टों पर तीक्ष्ण और श्रेष्ठों पर कोमल रहने से राजा अतिमाननीय होता है।।४।।

इस प्रकार सब राज्य का प्रबन्ध करके सदा इसमें युक्त और प्रमादरहित होकर अपनी प्रजा को पालन निरन्तर करे।।५।।

जिस भृत्यसहित देखते हुए राजा के राज्य में से डाकू लोग रोती विलाप करती प्रजा के पदार्थ और प्राणों को हरते रहते हैं वह जानो भृत्य अमात्यसहित मृतक है जीता नहीं और महादुःख का पाने वाला है।।६।।

इसलिये राजाओं का प्रजापालन ही करना परमधर्म है और जो मनुस्मृति के सप्तमाध्याय में कर लेना लिखा और जैसा सभा नियत करे उसका भोक्ता राजा धर्म से युक्त होकर सुख पाता है, इसके विपरीत दुःख को प्राप्त होता है।।७।।

उत्थाय पश्चिमे यामे कृतशौचः समाहितः। हुताग्निर्ब्राह्मणांश्चार्च्य प्रविशेत्स शुभां सभाम्।।१।।
तत्र स्थितः प्रजाः सर्वाः प्रतिनन्द्य विसर्जयेत्। विसृज्य च प्रजाः सर्वा मन्त्रयेत्सह मन्त्रिभिः।।२।।
गिरिपृष्ठं समारुह्य प्रासादं वा रहोगतः। अरण्ये निःशलाके वा मन्त्रयेदविभावितः।।३।।
यस्य मन्त्रं न जानन्ति समागम्य पृथग्जनाः। सकृत्स्नां पृथिवीं भुङ्क्ते कोशहीनोऽपि पार्थिवः।।४।। मनुः

जब पिछली प्रहर रात्रि रहै तब उठ शौच और सावधान होकर परमेश्वर का ध्यान, अग्निहोत्र, धार्मिक विद्वानों का सत्कार और भोजन करके भीतर सभा में प्रवेश करे।।१।।

वहाँ खड़ा रहकर जो प्रजाजन उपस्थित हों उन को मान्य दे और उनको छोड़कर मुख्य मन्त्री के साथ राज्यव्यवस्था का विचार करे।।२।।

पश्चात् उसके साथ घूमने को चला जाय, पर्वन के शिखर अथवा एकान्त घर वा जङ्गलजिस में एक शलाका भी न हो वैसे एकान्त स्थान में बैठकर विरूद्ध भावना को छोड़ मन्त्री के साथ विचार करे।।३।।

जिस राजा के गूढ़ विचार को अन्य जन मिलकर नहीं जान सकते अर्थात् जिसका विचार गम्भीर शुद्ध परोपकारार्थ सदा गुप्त रहै वह धनहीन भी राजां सब पृथिवी के राज्य करने में समर्थ होता है। इसलिये अपने मन से एक भी काम न करे कि जब तक सभासदों की अनुमति न हो।।४।।

आसनं चैव यानं च सन्धि विग्रहमेव च। कार्यं वीक्ष्य प्रयुञ्जीत द्वैधं संश्रयमेव च।।१।।
सन्धिं तु द्विविधं विद्याद्राजा विग्रहमेव च। उभे यानासने चैव द्विविधः संश्रयः स्मृतः।।२।।
समानयानकर्मा च विपरीतस्तथैव च। तथा त्वायतिसंयुक्तः सन्धिर्येयो द्विलक्षणः।।३।।
स्वयंकृतश्च कार्यार्थमकाले काल एव वा। मित्रस्य चैवापकृते द्विविधो विग्रहः स्मृतः।।४।।
एकाकिनश्चात्ययिके कार्ये प्राप्ते यदृच्छया। संहतस्य च मित्रेण द्विविधं यानम् उच्यते।।५।।
क्षीणस्य चैव क्रमशो दैवात्पूर्वकृतेन वा। मित्रस्य चानुरोधेन द्विविधं स्मृतमासनम्।।६।।
बलस्य स्वामिनश्चैव स्थितिः कार्यार्थसिद्धये। द्विविधं कीर्त्यते द्वैधं षाड्गुण्यगुणवेदिभिः।।७।।
अर्थसम्पादनार्थं च पीड्यमानः स शत्रुभिः। साधुषु व्यपदेशार्थं द्विविधः संश्रयः स्मतः।।८।।
यदावगच्छेद् आयत्माम् आधिक्यं ध्रुवमात्मनः। तदात्वे चाल्पिकां पीडां तदा सन्धिं समाश्रयेत्।।९।।
यदा प्रकृष्टा मन्येत सर्वास्तु प्रकृतीर्भृशम्। अत्युच्छितं तथात्मानं तदा कुर्वीत विग्रहम्।।१०।।
यदा मन्येत भावेन हृष्टं पुष्टं बलं स्वकम्। परस्य विपरीतं च तदा यायाद्रिपुं प्रति।।११।।
यदा तु स्यात्परिक्षीणो वाहनेन बलेन च। तदासीत प्रयत्नेन शनकैः सान्त्वयन्नरीन्।।१२।।
मन्येतारिं यदा राजा सर्वथा बलवत्तरम्। तदा द्विधा बलं कृत्वा साधयेत्कार्य्यमात्मनः।।१३।।
यदा परबलानां तु गमनीयतमो भवेत्। तदा तु संश्रयेत् क्षिप्रं धार्मिकं बलिनं नृपम्।।१४।।
निग्रहं प्रकृतीनां च कुर्याद्योऽरिबलस्य च। उपसेवेत तं नित्यं सर्वयत्नैर्गुरुं यथा।।१५।।
यदि तत्रापि सम्पश्येद्दोषं संश्रयकारितम्। सुयुद्धमेव तत्रारुपि निर्विशङ्क समाचरेत्।।१६।। मनु०।।

जब राजादि राजपुरूषों को यह बात लक्ष्य में रखने योग्य है जो (आसन) स्थिरता (यान) शत्रु से लड़ने के लिए जाना (सन्धि) उन से मेल कर लेना (विग्रह) दुष्ट शत्रुओं से लड़ाई करना (द्वैध०) दो प्रकार की सेना करके स्वविजय कर लेना (संश्रय) और निर्बलता में दूसरे प्रबल राजा का आश्रय लेना ये छः प्रकार के कर्म यथायोग्य कार्य को विचार कर कर उसमें युक्त करना चाहिये।१।।

राजा जो सन्धि, विग्रह, यान, आसन, द्वैधीभाव और संश्रय दो-दो प्रकार के होते हैं उन को यथावत् जाने।।२।।

(सन्धि) शत्रु से मेल अथवा उस से विपरीतता करे परन्तु वर्तमान और भविष्यत् में करने के काम बराबर करता जाय यह दो प्रकार का मेल कहाता है।।३।।

(विग्रह) कार्य सिद्धि के लिए उचित व अनुचित समय के स्वयं किया वा मित्र के अपराध करने वाले शत्रु के साथ विरोध दो प्रकार से करना चाहिए।।४।।

क्रमशः

धरोहर...

आर्य जगत् के देदीप्यमान नक्षत्र-
महात्मा हंसराज

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ०प्र०, लखनऊ
संचालक–गुरूकुल पूठ, हापुड़
मो० ९८३७४०२१९२

आर्य जगत् के देदीप्यमान नक्षत्र, महान ईश्वर भक्त, त्यागी, तपस्वी, कर्मयोगी समाज सुधारक ऋषि भक्त, डी०ए०वी० के सर्जक, महान शिक्षाविद् महात्मा हंसराज जी स्थित यज्ञ महापुरूष थे।

भवति दिवस वृत्तिः सप्तसप्तिः स्तथोष्ठाः,
सतत–कलुष–मध्यो दीव्यन्तीन्दुः क्षपायाम्।
समजनि समवृत्तिः सर्वथा यो अकलंको,
जयतु स मुनि–नम्यो हंसराजों महात्मा।।

सूर्य केवल दिन में प्रकाश करता है तथा स्वभाव से उष्ठा भी है, चन्द्रमा सकलंक है और रात में प्रकाशित होता है, किन्तु मुनियों द्वारा भी नमनीय महात्मा हंसराज सदा एक रस तथा निष्कलंक थे, अर्थात् सूर्य–चन्द्र से भी श्रेष्ठ थे, अतः उनकी जय हो। वे एक ऐसे कमल थे जो स्वगुण श्रवण की रात्रि में संकुचित हो जाते थे और परगुण कथन के दिवस में विस्तृत। एक बार की बात है कि किसी ने महात्मा जी कहने लगे मैं उनके जीवन के विषय में कुछ नहीं जानता, परन्तु इतना तो अवश्य पता है कि उस व्यक्ति ने कालिज के लिए २५०० रूपया दान दिया है। किसी व्यक्ति के क्रोध पर जब बात चली तब महात्मा हंसराज जी कहने लगे कि वह व्यक्ति बहुत उत्साही है, कठिनाई को कठिनाई नहीं समझता। क्योंकि कठिनाई को कठिनाई समझना ही बहुत बड़ी कठिनाई है। वे किसी की कभी भी निन्दा नहीं करते थे, अपितु दूसरों के गुणों की प्रशंसा करने में थकते नहीं थे। वे एक सच्चे सन्त पुरूष थे। महात्मा हंसराज के पुत्र बलराज पर सन् १६११ में लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने के षडयंत्र में शामिल होने के आरोप में मुकदमा चला और अन्त में काले पानी की सजा हुई। जिस दिन अदालत में निर्णय सुनाया जाना था उसी दिन महात्मा जी को जालन्धर में आर्य समाज के उत्सव पर जाना था। उ महात्मा जी अदालत में गए, फैसला सुना और वहाँ से सीधा स्टेशन पहुंचकर जालन्धर रवाना हो गए। जालन्धर में उन्होंने किसी से उस सजा की चर्चा तक नहीं की, सारा आर्यजगत् इस अभियोग के परिणाम की बड़ी उत्सुकता और चिन्ता से प्रतीक्षा कर रहा था। अगले दिन लोगों ने जब अखबारों में क्रान्तिकारी बलराज को कालेपानी की सजा का समाचार पढ़ा, तब सभी हतप्रभ रह गए।

हतप्रभ केवल सजा की भयंकरता पर ही नहीं बल्कि महात्मा जी की अद्भुत स्थिप्रज्ञता पर भी। धन्य हैं त्यागमूर्ति महात्मा हंसराज की। महात्मा हंसराज आर्यसमाज के प्रमुख आर्यनेता एवं महान समाजसेवी थे। केवल २२ वर्ष की आयु में ही डी०ए०वी० स्कूल लाहौर के प्रधानाचार्य बने।

महात्मा हंसराज जी पर निम्नलिखित पंक्तियाँ चरितार्थ होती है–

अपने दुःख में रोने वाले मुस्कराना सीख ले
दूसरों के दर्द में आंसू बहाना सीख ले।।
जो खिलाने में मजा है आप खाने में नहीं।
जिन्दगी में तू किसी के काम आना सीख ले।।
वीर कर वो काम जिससे तू सदा जिन्दा रहे।
हर किसी को प्यार से अपना बनाना सीख ले।।

महात्मा हंसराज जी का कथन है कि प्रत्येक आर्य का कर्त्तव्य है कि वह अपने नगर, कस्बा, ग्राम तथा कुल में एक बढ़िया उदाहरण बने और वेदों के प्रकाश को सामने रखे जो सहस्त्रों वर्षों के पश्चात् स्वामी दयानन्द ने पुनः प्रसारित किया है। यदि हमारे कर्म ऊँचे होंगे तो हम मुक्ति पाएंगें, अन्यथा नहीं। आर्य समाज की सदस्यता हमें मुक्ति नहीं दिलाएगी। मुक्ति तो हमारे शुभ कर्मों तथा पवित्र आचरण पर निर्भर है। कर्म भी एक यज्ञ है।

महात्मा जी कहा करते थे कि कोई जाति (समाज) अच्छी अवस्था में नहीं रह सकती, जिसके अन्दर सद्भाव न हों। सद्भावों का संचार जातीय उन्नति के लिए प्रथम बात है। कितनी गहरी बात है। उठता है विचार तो उठता है आदमी, गिरता है विचार तो गिरता है आदमी। मेरा मानना है कि आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है मनुष्य की चेतना को जगाना। याद रखें आज तक जो कुछ भी समाज में श्रेष्ठ आया है वह सद्विचारों से ही आया है। विचारों की ऊँचाइयों से आया है। आपके भीतर किसी दीन हीन दुःखियों, गरीब या मरीज की सेवा करने का भाव यदि आता है तो वह भी किसी विचार बीज के पैदा होने से ही आता है। वेद का संदेश है–आनो भद्राः क्रतयो यन्तु।

दो कर्म नेक तो दुनियां में इंसान अच्छा है।
समय जो प्रभु याद में गुजरे, तो वह वक्त अच्छा है।
हक के जुड़ जाये अगर दिल की तार, तो दिल अच्छा है।
अगर साफ कर ले तू दिल को, तो यही घर स्वर्ग से अच्छा है।

महात्मा हंसराज जी महान कर्मयोगी थे। समाज सेवा, साहित्य सृजन, अध्यापन लोममंगल में सदा संलग्न थे। मेरा मानन है कि सच का सामना हमें सामने आकर करना चाहिए, पीछे से नहीं। सच वह दर्पण है जो अपना चेहरा हमें दिखाता है और वह हमारा भी चेहरा ही देखना चाहता है, पीठ नहीं।

जीवन की अवधि का पता नहीं होता, पर हमें करने के लिए जो काम मिला है, उसका हमें पता होना चाहिए। उसे हमने पूरा करना है। जीवनकाल में यदि पूरा न भी हो तो भी संतोष होना ही चाहिए कि हमने श्रम और लगन में कोई कसर नहीं छोड़ी। चुनौतियों का सामना उनसे भाग कर नहीं जाग कर करना चाहिए।

महात्मा हंसराज जी के जीवन में अनेक कष्ट आये, विपत्तियां आयी परन्तु वे विचलित नहीं हुए। हमें भी चाहिए कि उनके जीवन से प्रेरणा लेकर आगे बढ़े। संध्या, सेवा, स्वाध्याय, संस्कार, सत्संग, सत्य को आत्मसात करे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के देहावसान के बाद महात्मा हंसराज जी ने सोचा कि आर्यसमाज की विचारधारा से पूर्णयुवक ही ऋषि के कार्य व स्वप्न को पूरा कर सकता है। उन्होंने ऋषि के कार्य को पूरा करने के लिए डी.ए.वी. स्कूल की स्थापना की। वेदप्रचार मण्डल द्वारा वेदों को प्रचार किया एवं यज्ञ, समाज सुधार के कार्यों द्वारा आर्यसमाज फला फूला। आज फिर ऐसे महापुरूषों की आवश्यकता है जो समाज के लिए महात्मा हंसराज की तरह तन–मन और धन अर्पण कर सकें। आइए महात्मा हंसराज जी के बताए हुए मार्ग पर चलते हुए अज्ञान, अन्याय, अभाव को दूर करने के लिए कटिबद्ध हों।

इन न इक शम्मा, अंधेरे में जलाये रखिये।
सुबह होने की है, माहौल बनाये रखिये।।
जपत जपत नित्यं मन्त्रवत् तस्य नाम
पठत–पठत पुण्यं भ्रातरस्तच्चरित्रम्।
भवत–भवत योग्यास्तस्य शिष्यत्वमाप्तुम्।
जयतु भुवि यथाऽसौ हंसराजो महात्मा।।

उस महात्मा के गुणों को धारण करो, उसके चरित्र को बार–बार पढ़ो और करो प्रयास उसके नाम लेवा बने रहने की पात्रता प्राप्त करने के लिए जिससे वह महापुरूष संसार में जयी हो–उसका नाम अमर रहे।

वृक्ष एक-स्थितियां अनेक

– वेदप्रकाश शास्त्री

प्रथम

पात कहे सुनो वृक्षराय, सदा रहो भरपूर।
अब के बिछड़े ना मिलें, हम नीचे तुम दूर।।१।।
वृक्ष कहे हे पातराय, सुना हमारे मीत।
एक आया एक चलसी, यही जगत की रीत।।२।।

द्वितीय

आग लगी इस वृक्ष को, जलते जा रहे हैं पात।
फिर क्यों बैठे डाल पर, जब पंख तुम्हारे साथ।।१।।
फल खाए इस वृक्ष के, गन्दे कीन्हें पात।
धर्म हमारा है यही, जलें इसी के साथ।।२।।

तृतीय

दो पक्षी हैं बैठे हुए, एक डाल पर सावधान।
एक है फल भोग रहा, दूसरा बना निगरान।।१।।
फल–भोक्ता जीव है, द्रष्टा हुआ भगवान्।
वृक्ष है संसार यह, जान सके तो जान।।२।।

चतुर्थ

वृक्षों की हो रही कटाई, देखो, कर–कर लम्बे हाथ।
अर्थ हेतु कर रहे अनर्थ, ले–लेकर सबको साथ।।१।।
अरण्यरोदन भी नहीं हो सकेगा, भर–भर कर लंबे सांस।
कट गए वन, बजेगी नहीं बांसुरी, जब नहीं रहेगा बांस।।२।।
हो जाओ सावधान भाइयो, वन–उपवन की करो रोपाई।
वायु शुद्ध तभी मिल पायगी, होगी जग में नहीं हंसाई।।३।।

महर्षि दयानन्द का त्रैतवाद मात्र अध्यात्म नहीं

–डॉ0 सत्यदेव आज़ाद

वेदों के निर्भीक उद्धारक और आर्य समाज के संस्थापक देव दयानन्द को बहुधा समाज सुधारक के रूप में ही जाना जाता है। सत्यार्थ प्रकाश तथा ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में जिन महान व दार्शनिक सिद्धान्तों की मीमांसा उनके द्वारा की गई है, उनके बारे में कम व्यक्तियों का ही ध्यान जाता है।

भारत में सहस्त्रों वर्षों के पश्चात् वैज्ञानिक प्रणाली का अनुसरण करते हुए स्वामी दयानन्द ने वेदों का भाष्य करने के लिए जो अनूठी प्रतिभा प्रदर्शित की वह आज भी एक चमत्कार से कम नहीं, उनका दार्शनिक सिद्धान्त त्रैतवाद आधुनिक भौतिकवाद के लिए एक चुनौती है। वेदों के सघन वन में महर्षि दयानन्द ने एक नवीन सिद्धान्त की खोज की उन्होंने अनुभव किया कि सम्पूर्ण विश्व में तीन पदार्थ नित्य है, अनश्वर है। ईश्वर, जीव तथा पंचमहाभूत स्वरूपा प्रकृति सत्व, रज और तम में विषमता का अविर्भाव विकृति की उत्पत्ति का कारण है। इन में प्रकृति तीनों कालों में अपने मूलरूप में विद्यमान रहने वाली सतरूपा है। जीव तीनों कालों में रहने वाला ज्ञानवान व अनन्दस्वरूप है। अतः उसे सत्चित आनन्द कहा गया है। स्वामी जी के अनुसार ईश्वर तथा जीव व प्रकृति का अंश अंशी का सम्बन्ध नहीं, व्यापक–व्याप्य का सम्बन्ध है। जब ईश्वर को हम सर्वव्यापक निराकार अपरिणामी और एकरस मानते हैं तब भला उसमें परिवर्तन या परिणाम कैसे सम्भव है? परिणाम तभी सम्भव है जब वह सावयव हो, आकाश उसके मध्य विद्यमान हो। ईश्वर तो आकाश से भी अधिक सूक्ष्म है वह आनन्द में भी व्यापक है। तब फिर ईश्वर को क्या पड़ी है कि वह अल्पज्ञ जीवन अथवा जड़ बने और फिर उससे मुक्त होने के लिए प्रयासशील रहे।

स्वामी दयानन्द ने वेदों के आधार पर ही यह खोज की कि वर्तमान सृष्टि प्रथम और अन्तिम सृष्टि नहीं है। सृष्टि और प्रलय का एक क्रम अथवा चक्र है जो अनादि काल से चलता आ रहा है और अनन्त काल तक चलेगा। इसके विपरीत भौतिकवाद का कहना है कि यह प्रथम सृष्टि है। सृष्टि से पूर्व आरम्भ में अनन्त आकाश में पदार्थ विखरा हुआ था, निस्तब्धता थी। अकस्मात् इस स्थिर पदार्थ में गति उत्पन्न हो गई जो शनैः–शनैः विभिन्न लोकों, ग्रहों, उपग्रहों तथा नक्षत्रों की रचना में स्वयं परिवर्तित हो गई। अनन्ताकाश में अनादि काल से फंसे निर्जीव जड़ पदार्थों ने मात्र सृष्टि की ही रचना नहीं कर डाली अपितु मानव शरीर में भी जीव जैसी चेतन सत्ता को भी उत्पन्न कर दिया जो आज भी शरीर के संघटित और विघटित होने पर उत्पन्न होती है, नष्ट नहीं होती।

भला जो पदार्थ अनन्त आकाश में अनादि काल से निष्क्रिय अवस्था में पड़ा था, वह क्यों और कैसे सक्रिय हो उठा? इस स्थूल शरीर के अतिरिक्त जीवात्मा के ऊपर एक सूक्ष्म शरीर भी होता है जो मृत्यु के पश्चात् अन्य जन्मान्तरों में उस समय तक रहता है जब तक कि जीव मोक्ष प्राप्त नहीं कर लेता। इस सूक्ष्म शरीर में ही मानव के समस्त कर्म संस्कार रूप में संचित रहते हैं। तदर्थ उसकी समस्त अनुभूतियां उसमें प्रसुप्तावस्था में रहती हैं। मनुष्य के जन्म लेने पर पूर्व जन्म के संचित संस्कार अनुकूल वातावरण के मध्य विकसित हो जाते हैं जो प्रतिकूल स्थिति में निष्क्रिय रहते हैं।

तैत्रवाद में मोक्ष का स्वरूप नितान्त भिन्न है जहां न तो जीव ब्रह्म बनता है और न उसे ब्रह्म का सानिध्य ही प्राप्त होता है। मोक्ष अवस्था की एक अवधि है जिसके अनुसार संसार में उसका पुनरावर्त्तन होता है। स्वामी जी का तर्क है कि किसी भी नहीं का एक तट हो ही नहीं सकता। यह तो निशिचित है कि भूतकाल में किसी भी समय जीवात्मा ईश्वर बद्ध हुआ था, यदि वह आदि काल से ही वृद्धावस्था में है तब इस तथ्य की निश्चितता कहां कि वह भविष्य में मुक्त हो जायेगा।

अपरिणामी ब्रह्म में वस्तुतः कोई भी परिवर्तन सम्भव नहीं है। स्वामी जी ने इसी लिए कहा है कि जो कभी बद्ध हुआ है वह मुक्त होगा और जो कभी मुक्त हुआ है वह पुनः बद्ध होगा। वह बद्ध या मुक्त होने वाला ईश्वर नहीं जीव है। सृष्टि–प्रलय, बन्धन या मुक्ति तथा जन्म व पुनर्जन्म के अद्भुत चक्र अनादि काल से चल रहे हैं और चलते रहेंगे।

एक बार व्यक्ति जब यह विश्वास कर लेता है कि मैं ईश्वर से भिन्न जीवरूप हूँ। संसार मिथ्या नहीं वास्तविक है। पुनर्जन्म का चक्र क्रम अनादि और अनन्त है। अपने कर्मों के द्वारा हम ईश्वर द्वारा फल प्राप्त करते हैं। हम उभय योनि हैं अर्थात् हम कर्म करने में पूर्ण स्वतन्त्र ही हैं और जहां तक पूर्ण जन्म के फल योग का सम्बन्ध है। हम परतन्त्र हैं, जो कुछ काम सोचते हैं करते हैं कहते हैं कि वह अवश्य हमारे सूक्ष्म शरीर में अंकित हो जाता है और मृत्यु के पश्चात् ही हमारे साथ जाता है। हमारा ध्येय जन्ममरण के बन्धन से मुक्त होकर ईश्वर की प्राप्ति है। प्रभु के सानिध्य में आनन्द की प्राप्ति है। तब हमें सत्पथ पर चलने में विशेष बाधा नहीं पड़ती।

देव दयानन्द का ईश्वर न तो किसी आकाश विशेष में, रहने वाला है और न क्षीर सागर में सोने वाला ईश्वर है। वह तो सर्वत्र व्याप्त है और एकरस है। अन्तः करण की शुद्धि द्वारा ही अपने अन्दर हृदय में उसके दर्शन किये जा सकते हैं। और यह शुद्धि सतपथ पर चलकर ही हो सकती है। इस मार्ग पर चलने से ही समाज देश तथा सम्पूर्ण विश्व का कल्याण होगा। अन्तःकरण की शुद्धि से समस्त जीवों का कल्याण सम्भव हो सकेगा।

इस प्रकार महर्षि दयानन्द सरस्वती का त्रैतवाद कोरा अध्यात्म ही नहीं वरन् हमारे सम्पूर्ण भौतिक जीवन को भी प्रभावित करता है। हम तदनुसार उदात्त भावनाओं से युक्त होकर जीवन संघर्ष में आगे बढ़ते हैं।

–प्रेरक प्रसंग

सद्व्यवहार का प्रताप

एक दिन बादशाह सुबुक्तगीन शिकार के लिए गये। उन्हें शिकार का बड़ा शौक था। बहुत देर तक तलाश करने पर भी कहीं मारने योग्य जानवर न मिला, मन भारी था और आंखें चारों ओर शिकार की तलाश में लगी हुई थी।

थोड़ी देर बाद क्या देखा कि एक हिरनी अपने बच्चे के साथ बेखटके चर रही है। हिंसा–दया में बदल गयी। उन्होंने सोचा कि मारने से यह अच्छा होगा कि हिरनी के सुन्दर बच्चे को पकड़ लिया जाय।

वे दूर उतरे, धीरे–धीरे समीप गये ओर दांव ताककर बच्चे को पकड़ लिया। वे वेहद प्रसन्न थे। बच्चे के पांव बांधकर घोड़े पर आगे काठी पर रख लिया और अपनी राजधानी की ओर चल पड़े। बेचारी हिरनी में आखिर मां का भावुक हृदय था। अपनी सन्तान के लिए वह विह्वल थी। अपने प्राणों की परवाह न कर वह भी उसके पीछे–पीछे चली। अपने प्यारे बच्चे के वियोग में हिरनी के नेत्रों में आंसू बह रहे थे। सुबुक्तगीन आखिर मनुष्य ही तो था। हिरनी की कातर अवस्था देखकर उसे भी दया आ गयी। उसने घोड़ा रोका और बच्चे की टांगें खोलकर छोड़ दिया। बच्चा छलांग मारकर मां के पास आ गया।

हिरनी को तो मानों नया संसार मिल गया। बच्चे को प्यार से चाटने लगी। वह बहुत प्रसन्न हुई और उछलती–कूदती अपने बच्चे के साथ वन में लौट गयी। पर लौटते समय जब तक सुबुक्तगीन आँखों से ओझल नहीं हुआ, तब तक वह उसकी ओर देखता रहा।

– एकदा

सच्चा राजा कौन?

बंगाल में गुप्करा एक छोटा–सा स्टेशन है। एक दिन रेलगाड़ी आकर स्टेशन पर खड़ी हुई। उतरने वाले झटपट उतरने लगे और चढ़ने वाले दौड़–दौड़कर गाड़ी में चढ़ने लगे। एक बुढ़िया भी गाड़ी से उतरी। उसने अपनी गठरी खिसकाकर डिब्बे के दरवाजें पर तो कर ली थी, किन्तु बहुत चेष्टा करके भी उतार नहीं पायी थी। कई लोग गठरी को लांघते हुए डिब्बे में चढ़े और डिब्बे से उतरे। बुढ़िया ने कई लोगों से बड़ी दीनता से प्रार्थना की कि उसकी गठरी उसके सिर पर उठाकर रख दें, किन्तु किसी ने उसी बात पर ध्यान नहीं दिया। लोग ऐसे चले जाते थे, मानो बहरे हों। गाड़ी छूटने का समय हो गया। बेचारी बुढ़िया इधर–उधर बड़ी व्याकुलता से देखने लगी। उसकी आंखों से टप–टप आंसू गिरने लगे।

एकाएक प्रथम श्रेणी के डिब्बे में बैठे एक सज्जन की दृष्टि इस बुढ़िया पर पड़ी। गाड़ी छूटने की घण्टी बज चुकी थी, किन्तु उन्होंने उसकी परवाह नहीं की। अपने डिब्बे से वे शीघ्रता से उतरे और बुढ़िया की गठरी उठाकर उन्होंने उसके सिर पर रख दी। वहां से बड़ी शीघ्रता से अपने डिब्बे में जाकर जैसे ही वे बैठे, गाड़ी चल पड़ी। बुढ़िया सिर पर गठरी लिए उन्हें आशीर्वाद दे रही थी– बेटा! भगवान तेरा भला करे।'

क्या आप जानते हैं कि बुढ़िया की गठरी उठा देने वाले सज्जन कौन थे? वे थे कासिम बाजार के राजा मणीन्द्रचन्द्र नन्दी, जो उस गाड़ी से कलकत्ता जा रहे थे। सचमुच वे राजा थे, क्योंकि सच्चा राजा वह नहीं जो धनी है या बड़ी सेना रखता है। सच्चा राजा वह है, जिसका हृदय उदार है, जो दीन–दुःखियों और दुर्बलों की सहायता कर सकता है।

आर्ष ग्रन्थ–उपनिषद्

– संकलन
– सोमन्द्र शास्त्री, मेरठ

जीवन की सम्पन्नता एवम् धन–धान्य के बाहुल्य के होते हुए भी मानव को शान्ति मिल सके, ऐसा सम्भव नहीं है। धर्म ही केवल ऐसा तकनीकी स्त्रोत हैं। जिससे व्यक्ति का मन और बुद्धि सृष्टि के उच्च कारणों की जानकारी करके परम आनन्द की प्राप्ति कर सकता है। वेदान्त मानव के विकास को उच्च कोटि तक ले चलता है, जहां मानव श्रेष्ठ मानव बनता है और उस श्रेष्ठ मानव तथा परमात्मा के बीच की दूरी कम हो जाती है।

अतः समूचे आर्ष ग्रन्थ इस पर पथ की ओर मानव को ले चलते हैं। इन ग्रन्थों में उपनिषद् ग्रन्थ वेदों का सार प्रदर्शित करने वाले ग्रन्थ हैं। उपनिषद् का अर्थ है वह ज्ञान जो एक शिष्य को गुरू के निकट बैठकर प्राप्त होता है, अर्थात् गुरू और शिष्य का निकटतम सम्बन्ध होने के पश्चात् ही उच्च ज्ञान की प्राप्ति हो सकता है। आत्म एवम् ब्रह्म ज्ञान उच्चतम कोटि के ज्ञान हैं, अतः गुरू और शिष्य का सम्बन्ध भी यहां उच्च कोटि का होगा। उपनिषद् सत्य की खोज करने के ग्रन्थ हैं। बिना उपनिषद् के समझे भारतीय इतिहास व संस्कृति की नहीं समझा जा सकता। भक्ति, कर्म तथा आध्यात्मिक मार्गों का समन्वय जिसका गीता में उल्लेख है, उपनिषदों से ही प्राप्त हुआ है। श्री ब्लूम फील्ड ने अपनी पुस्तक "The Religinon of the Veda" के पृष्ठ ५१ पर स्पष्ट लिखा है कि कोई भी हिन्दू विशिष्ट विचार ऐसा नहीं है जिसका मूल उपनिषदों में न हो। भारतवर्ष अपने जीवन एवं संस्कृति के सभी प्रकाशमान पक्षों के लिए उपनिषदों का ऋणी है। श्री गाईन मिलबर्न ने Indian Interpreter पत्रिका के अपने लेख ष्बैतपजपंद टमकंदजपेउष् में स्पष्ट लिखा है कि ईसाइयों को वेदान्त के प्रभाव ग्रहण करने पे अपने मस्तिष्क को खुला रखना चाहिए।

वैसे तो उपनिषदों की संख्या १०० से अधिक है, परन्तु महर्षि दयानन्द ने केवल ग्यारह की ही आर्ष एवं मुख्य माना है। इनके नाम, मन्त्रों की संख्या, इनमें प्रदर्शित जीवन रहस्य एवं दर्शन तथा प्रत्येक तथा प्रत्येक उपनिषद् के प्रथम मन्त्र एवं उसके भावार्थ आगे दिए गये हैं–

आर्ष–उपनिषद्

१. ईशोपनिषद्– जीवन–व्यापार, विद्या–अविद्या, सम्भूति–असम्भूति, जन्म–मरण, (१८ मन्त्र) सृष्टि–सूर्य, कर्म व दैवी इच्छा, ब्रह्मा–सृष्टि का ज्ञज्ञन कराया गया है।

प्रथम मन्त्र–

ॐ ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्मां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गुधः कस्यस्द्धिनम्।।

अर्थ– "इस चलायमान संसार में जो कुछ चलता हुआ है, वह सब ईश्वर से आच्छादित है। 'जीवन में भोगों को ईश्वर की देन समझकर भोगो। किसी दूसरे के धन का लालच मत करो।"

2. केन–आत्स चेतना–ब्रह्म चेतना का सम्बन्ध, ब्रह्म मूल प्रेरक, कर्म का नियम, (३४मन्त्र) ब्रह्मा की शक्ति का ज्ञान कराया गया है।

प्रथम मन्त्र–

केनेषितं पतति प्रेषितं मनः केन प्राणा प्रथमः प्रेति युक्तः।
केनेषितां वाचमिमां वदन्ति चक्षुः श्रोत्रं क उ देवो युनक्ति।।

अर्थ–" किससे निर्णीत, किससे प्रेरित होकर, मन अपने विषयों में गिरता है? किससे प्रेरित होकर प्रथम (मूल) प्राण चलता है? किसके द्वारा लोग वाणी का प्रयोग करते है? कौन देव, आँख व कान को उनके कर्मों में लगाता है?"

3. कठ–श्रेय और प्रेय, श्रेय व प्रेय मार्गों का फल, आत्म ज्ञान, ब्रह्म ज्ञान, (११६ मन्त्र) आत्मा का स्वरूप, जीवात्मा की मख्य प्रक्रियाएँ, जीवात्मा और परमात्मा का सादृश्य, पीवात्मा का केन्द्र, परमात्मा और भौतिक जगत, ब्रह्म ज्ञान का महत्व और इसके विविध रूपों का ज्ञान कराता है।

प्रथम मन्त्र–

अन्यच्छेऽन्यदुतैव प्रेयस्ते उमे नानार्थ सिनीतः।
तयो श्रेय आददानस्य साधु भवति हीयतेऽर्थद् य प्रेयो वृणीते।।

अर्थ–" श्रेय एक वस्तु है, प्रेय उससे भिन्न दूसरी वस्तु है, वे भिन्न–भिन्न फल देने वाली दोनों मनुष्य को बांधती हैं। श्रेय को चुनने वाले का कल्याण होता है, प्रेय को चुनने वाला अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं करता।"

4. मुण्डक–परमात्मा व जीव दो पक्षी के समान, आत्मसिद्धि–बाधाएं और (६४ मन्त्र) अपर्याप्त साधन, आत्म सिद्धि के साधन, सत्य का महत्व, सिद्ध पुरूष के चिन्ह का ज्ञान कराता है।

विशिष्ट मन्त्र–

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया, समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयो रन्यः पिप्लं स्वाद्वत्यश्नन्नन्यो अभिचाकशोति।।

अर्थ–"दो पक्षी हैं, वे परस्पर प्रेमी और सखा हैं और एक ही वृक्ष पर बैठे हैं। उनमें एक वृक्ष के स्वादिष्ट फलों को खाता है, दूसरा न खाता है हुआ केवल देखता है।"

5. माण्ड्क्य– ओ३म् की महिमा, आत्मा कके पाद, अंग और १६ मुख का दिग्दर्शन (१२) मन्त्र कराता है।

प्रथम मन्त्र– ओमित्येतदक्षर मिदं सर्व तस्योपव्याख्यानं
भूतं भवद् भविष्यदिति सर्वमोकार एवं,
यच्यान्यत् त्रिकालातीतं तदप्योंकार एव।।

अर्थ–ओ३म्–ऐसा अक्षर है। यह सब कुछ (सारा जगत्) उसका उपध्याख्यान है, जो हो चुका, जो वर्तमान है, जो आगे होगा, यह सब ओंकार ही है (ओंकार का व्याख्यान ही है)। और जो कुछ तीनों कालों से परे दूसरा है, वह भी ओंकार ही है।

6. प्रश्न– प्रश्न उपनिषद् एक संवाद का वर्णन है। ६ जिज्ञासु पिप्लाद के पास (६७मन्त्र) पहुंचे। हर एक ने एक–एक प्रश्न पूछा और उत्तर पाया। यह छः थे– (१) भारद्वाज का पुत्र सुकेश, (२) शिव कुमार सत्यकाम, (३) गर्ग गत्र वाला सौर्यायणी, (४) कोसल निवासी आश्वलायन,(५) विदर्भ निवासी भार्गव तथा (६) कत्य का पुत्री कबन्धी। प्रश्न निम्नांकित है– (१)सृष्टि जगत की रचना, (२) शरीर के देव और उनकी तुलनात्मक स्थिति, (३) जीवन विद्या, (४) मनोविज्ञान–चेतना की विविध अवस्थाएं (५) धर्म–प्रभु भक्ति का फल तथा (६) पुरूष और उसकी १६ कलाएं।

7. तैत्तिरीय– तैतिरीय उपनिषद्विशेष तीन अध्यायों से विख्यात है–(१)शिक्षा वल्ली, (२) ब्रह्मानन्द वल्ली व (३) भृगु बल्ली।

(क) पहला तो विद्यालय के वातावरण और विद्या–प्राप्ति के बाद के जीवन का ही उल्लेख है।

(ख) दूसरा ब्रह्म प्राप्ति के साधन, ब्रह्मानन्द के स्वरूप से सम्बन्धित है।

(ग) यह वल्ली भृगु और उसके पिता का संवाद है जिसमें ब्रह्म का स्वरूप, अन्न (सम्पत्ति) के महत्व और उचित प्रयोग, आत्म ज्ञान के फल से सम्बन्धित हैं

प्रथम मन्त्र–

ओ शं नो मित्रः शं बरूणः। शं नो भवत्वर्यमा शं न
इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णु रूरूक्रमः। नमो ब्रह्मणे। नमस्ते।
वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म–वदिष्यामि। ऋतं वदिष्यामि। सत्यं वदिष्यामि। तन्मास– वतु तद्वक्तारमवत्। अवतु माम्। अवतु वक्तरम्।

अर्थ–ओ३म्, मित्र, वरुण, अर्यमा, इन्द्र बृहस्पति, विष्णु हमारे लिए शान्ति दायक हों। अनादि परमात्मा को नमस्कार, वायु को नमस्कार। ऐ ब्रह्म तुम प्रत्यक्ष हो और तुम्हें प्रत्यक्ष घोषित करूंगा। पवित्र एवम् सत्य बोलूंगा। वह मेरी एवम् वक्ता की रक्षा करे। मेरी रक्षा करो। वक्ता की रक्षा करो।

8. ऐतरेय–मनुष्य शरीर के महत्व, पुरूष की स्थिति सम्बन्धी इसमें (३३ मन्त्र) चर्चा है।

प्रथम मन्त्र–

ता एता देवता सृष्टा अस्मिन् महत्यर्णावै प्रापतन।
नः प्रजानीहि, यस्मिन् प्रतिष्ठित। अन्नमादामेति।।

यह रचे हुए देव इस महान समुद्र में आ पड़े। परमात्मा ने उन्हें भूख और प्यास से युक्त कर दिया। उन देवों ने परमात्मा से कहा–हमारे लिए ऐसा स्थान बताओ जिसमें रहकर हम अन्न का भक्षण कर सकें।

9. श्वेताश्वतर–विश्व के कारण, त्रयवाद, ईश्वर भक्ति के फल, जीवात्मा की विपत्ति और उसकी निवृत्ति के उपाय, जीवात्मा के स्वरूप और उसकी गति, परमात्मा के स्वरूप और प्रकृति और जीव से उसके सम्बन्ध की व्याख्या की गई है।

प्रथम मन्त्र–

ब्रह्म वादिनो वदन्ति–
किं कारणं ब्रह्मकुतः स्मजाता जीवाम केन स्व च संप्रतिष्ठाः।
अधिष्ठताः केन सुखेतरेषु वर्त्तमहे ब्रह्मविदो व्यवस्थाम्।।

ब्रह्म की बावत चर्चा करने वाले कहते हैं–

"जगत का कारण ब्रह्म कौन है? किसके नियम में हम सुख–दुःख में व्यवस्था के अनुसार बरत रहे हैं?"

10. छान्दोग्य– प्रणव (ओम्) की उपासना, देव–असुर संग्राम, आपत्तिकाल–धर्म, (२४ मन्त्र) विश्वव्यापी यज्ञ और साम गान, धर्म के स्कन्ध, तीन यज्ञ और यजमान की कामनाएं, जीवन के तीन यज्ञ, आत्मा के स्वरूप, ब्रह्म के चार पाठः ज्येष्ठ, प्रवाहण और गौतम, महापाप, दृष्ट जगत की रचना, आत्मा के स्वरूप (तत्वमसि सनत्कुमार और नारद, आत्मा के लिंग, शुद्धि में प्रगति, ब्रह्मपुर व ब्रह्मलोक, ब्रह्मचर्य, ब्रह्मलोक में पहुंचने के साधन, पितृ लोक, मुक्त आत्माओं की दशा, आत्मा के स्वरूप, प्रजापति का देवों और असुरों को उपदेश से सम्बन्धित विषयों

शेष पृष्ठ ६ पर

पृष्ठ ५ का शेष

आर्ष ग्रन्थ..

का ज्ञान दिया गया है।

प्रथम मन्त्र :– ओमित्येतदक्षरमुद्गीथमुपासीत। ओमिति हयुद्गायति तस्योप व्याख्यानम्।।

अर्थ– ओ३म् की उपासना करो जो शाश्वत पुरूष है, ओ३म् उदगीथ है, सामवेद का रचैय्यता है, ओ३म् से ही साम प्रारम्भ होता है। ओ३म् की यह व्याख्या है।

11. वृहदारण्यक: सृष्टि रचना, देवासुर संग्राम, उद्गाता की विशेष प्रार्थना, मनुष्यों के लिंग भेद, वर्ण भेद, मनुष्य की मौलिक चेष्टाएं, अन्न और अन्नाद, तीन लोक और सम्प्रति, लोक के रंग रूप, पदार्थों में परतम जातियां, यज्ञवल्क्य–मैत्रेयी संवाद, मधु विद्या अविनाश के सिद्धान्त, विचित्र प्रतियोगिता, आत्मा की प्रमुख प्रक्रियाएवं, हृदय के महत्व, आन्तरिक ज्योति, आत्मा और उसकी अवस्थाएं, सकाम और निष्काम कर्मों के फल, प्रजापति के उपदेश, जीवन क्या है? पंचाग्नि विद्या, शान्ति पाठ से सम्बन्धित विषयों की विवेचना का ग्रन्थ है।

अन्तिम मन्त्र– ॐ पूर्णमदः पूर्णामिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते।।

अर्थ –वह पूर्ण है, यह भी पूर्ण है, पूर्ण से पूर्ण निकलता है, इसपर भी शेष पूर्ण ही रहता है।

उपनिषद् में स्वाध्याय की महिमा

ऋतञ्चस्वाध्याय प्रवचने च सत्यञ्च स्वाध्याय प्रवचने च।

तपश्च स्वाध्याय प्रवचने च। दमश्च स्वाध्याय प्रवचने द।

शमश्च स्वाध्याय प्रवचने च। अग्नयश्च स्वाध्याय। प्रवचने च।

अग्निहोत्रञ्चस्वाध्याय प्रवचने च। अतिथयश्च स्वाध्याय प्रवचने च।

मानुषञ्च स्वाध्याय प्रवचने च। मानुषञ्च स्वाध्याय प्रवचने च।

प्रजा च स्वाध्याय प्रवचने च। प्रजनश्चस्वाध्याय प्रवचने च।

प्रजातिश्च स्वाध्याय प्रवचने च। स्वाध्याय प्रवचने एवेति नाको मौद्गल्यः ।

तद्धि तपस्तद्धितपः। (तैत्तिरीयोपनिषद् प्रथम वल्ली नवमोऽनुवाकः:)

स्वाध्यायान्मा प्रमदः। स्वाध्याय प्रवचनाभयां न प्रमदिव्यम्।

(तैत्तिरीयोपनिषद् प्रथम वल्ली एकादशेऽनुवाकः)

ईश्वर के प्रेम को हृदय में भरपूर रखने के लिए स्वाध्याय और प्रवचन की आवश्यकता है।

स्वाध्याय दो प्रकार का होता है– (१) शास्त्रों का नियमपूर्वक अध्ययन और मनन करना, (२) आत्माध्ययन–आत्मा–निरीक्षण अर्थात् अपने कृत्यों पर दृष्टि रखते हुए भी जो बुरे हों उन्हें छोड़ने और जो भले हों उन्हें पुनः करने की दृढ़ इच्छा अपने भीतर करते रहना।

अध्यापन आदि के द्वारा वेद के प्रचार को प्रवचन कहते हैं। उपनिषद् वाक्यों में यह शिक्षा दी गयी है कि समस्त कार्य करते हुए भी स्वाध्याय और प्रवचन, वेद के विचार और प्रचार को सदैव अपना लक्ष्य बनाये रखना चाहिए। किन विचारों को सदा दृष्टि में रखना चाहिए उसको लक्ष्य में रखते हुए उपनिषद् में कुछ शब्दों द्वारा निर्देश संकेत दिये गये हैं। उन संकेतों के अर्थ निम्न प्रकार है–

१. ऋतम्– तीनों कालों में एक जैसी रहने वाली वेदाज्ञा पर चलना।

२. सत्यम्– मन और वाणी और कर्म में समता का होना।

३. तपः द्वन्द्वों का सहना और नियमित जीवन बनाना।

४. दमः–इंद्रियों पर अधिकार रखना।

५. शमः–अन्तःकरणों को शान्त रखना।

६. अग्नयः– ब्रह्मचर्य, गृहस्थ और वानप्रस्थ सम्बन्धी तीनों प्रकार की अग्नियों को स्थापित करना।

७. अग्निहोत्रम्– प्रतिदिन हवन करना।

८. अतिथम्– सदा अतिथियों की सेवा करना।

९. मानुषम्– मनुष्य ऋण चुकाना।

१०. प्रजा– सन्तान का पालन और पोषण करना।

११. प्रजनः– सन्तति द्वारा समाज का विकास करना।

१२. प्रजातिः– अपनी सन्तान को उत्तम सन्तति निर्माण की प्रेरणा देना।

उपर्युक्त बारह कर्तव्य कर्मों का निर्देश करते हुए उपनिषत्कार चाहता है कि नाक मौद्गल्य ऋषि के सिद्धान्तानुसार प्रत्येक मनुष्य को स्वाध्याय को ही तप मानना चाहिये और प्रवचन को भी तप मानना चाहिए।

उपनिषद् की इस भावना के अनुसार ही प्रत्येक आचार्य अपने शिष्य को उपदेश देता है कि शिष्य! आज तुम स्नातक बनकर समाज में जा रहे हो, परन्तु अपने जीवन की सफलता के लिए तुम्हें चाहिए कि स्वाध्या करने में कभी आलस्य न करना और जो स्वाध्याय करो उसके प्रवचन में भी आलस्य न करना अर्थात् शिक्षा, ज्ञान–विज्ञान और समाज शास्त्र के क्षेत्र में जो भी नवीन विचार विद्वानों के प्राप्त हों उनपर विचार और चिन्तन करना और समाज में अपने प्रवचन द्वारा उन विचारों का प्रचार करना तुम्हारा पावन कर्तव्य है। विद्यार्थी जीवन से इस दिशा में सक्रिय बनने की आवश्यकता है।

क्या नारी की आबरू सुरक्षित है?

नरसिंह सोनी आर्य

आज देश में स्त्री जाति बलात्कार, रेप, गैंगरेप, अपहरण, हत्या आदि के जुर्म दिनों दिन बढ़ रहे है। क्या कारण है? क्या इस अपराध को रोकना असम्भव हो गया है? कोई दिन ऐसा नहीं जाता कि इस तरह की घटना पढ़ने को न मिले। आप इस तरह की घटना से हुई वेदना को अच्छी तरह समझ सकते है। इसके लिए मेरे कुछ सुझाव –

१. बलात्कारी को मृत्यु दण्ड हो और उसने उसकी हत्या की कर दी हो, तो वह दुगना अपराधी हो जाता है। अपराधी की उम्र सीमा तय न हो। अपराधी–अपराधी होता है।

२. अपराध कायम होने बाद ३ दिन १ सप्ताह या ६ महीने के अन्दर उसे सजा अवश्य मिल जानी चाहिए। देरी से मिला न्याय अपराध को बढ़ावा दे रहा है।

३. इस तरह की घटनाओं के लिए अलग से न्यायालय का प्रबन्ध ज्यादा अच्छा रहेगा, ताकि न्याय जल्दी मिले।

४. 'तू चीज बड़ी है मस्त–मस्त'। इस तरह के गाने व सिनेमा ने लोगों की मानसिकता को दुसित कर रक्खा है। जहां इन्द्रियों के लोभ के अलावा कुछ नहीं सूझता।

५. गुरूकुलीय शिक्षा पद्धति से अच्छे संस्कार मिलते हैं। इसका प्रचार ज्यादा हो।

६. स्कूल–कालेजों में भी नैतिक शिक्षा के लिए हफ्ते में १ या २ दिन प्रवचन होने चाहिए। जो अच्छे धार्मिक विद्वानों द्वारा।

७. 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'। कहने वाला देश आज कहां चला गया है। अब दिखला दो राज मोदी जी का है, पोपाबाई का नहीं। देश में १०–२० को मृत्यू दण्ड मिल जावे तो यह रोग मिट जावेगा। पूरी सम्भावना है।

८. हमेशा देखा जा रहा है कि सांसद–विधायक, मंत्री आदि के सिफारिस या उन पर किसी ऐसे केश में एफआईआर तक नहीं लिखी जाती। इसका ताजा उदाहरण उन्नाव की घटना है, जिसमें उसके पिता को पीट–पीट कर मार डाला। सभी के न्याय की प्रक्रिया समान होनी चाहिए।

९. न्यायालय में जांच पूरी होने के बाद उस केश को हाई–कोर्ट, सुप्रीम कोर्ट या राष्ट्रपति के पास क्षमा याचना या दुबारा जांच के लिए नहीं भेजा जाना चाहिए।

१०. माताओं–बेटियों, बच्चियों पर इस तरह के अपराध सहन करने के लायक नहीं है। क्या सरकार उनकी जान–अस्मत की रक्षा नहीं कर सकती? रक्षा कर सकती है तो सख्त सजा व तुरन्त न्याय क्यों नहीं मिल पाता?

११. सजा का किसी को डर नहीं है। इसलिए कोई दिन ऐसा नहीं जाता जिस दिन इस तरह के अपराध न हो। डकैती, चोरी, अपहरण, हत्या आदि के अपराध भी दिनों–दिन बढ़ रहे हैं। कठोर दण्ड के अभाव में। क्या चोरों, बलात्कारों, हत्यारों को आजादी मिली हुई है जो जब चाहे, जिसके साथ चाहे बलात्कार करे, चोरी करे–हत्या करे। उनको डर क्यों नहीं है? दण्ड ही राज करता है, तभी जनता सुखी रह सकती है।

!! ओ३म् !! !! कृण्वन्तो विश्वमार्यम् !!

आर्य समाज महोली के तत्वावधान में वेद ज्ञान प्रशिक्षण सत्र

स्थान : सरस्वती शिशु मन्दिर, आचार्य नगर, महोली, सीतापुर, उ०प्र०
निकट : संकटा देवी मन्दिर मुख्य राष्ट्रीय राजमार्ग नगर महोली

दिनांक : 02 जून शनिवार प्रातः 7:00 बजे से 03 जून रविवार 2018 सायं 6.00 बजे तक

आर्य समाज, महोली, सीतापुर

मो0 : 7786886634, 77896763635, 8853566888, 7398300029

प्रशिक्षण प्रभारी :- आचार्य संजीव जी, आचार्य गुरूकुल महाविद्यालय, चित्तौड़झाल, मुजफ्फर नगर, उ0प्र0

नोट : यह सत्र आयोजन गैर राजनीतिक, किसी भी प्रकार के पार्टी बन्दी व गुटबाजी व अन्य के लिए नहीं है। सिर्फ वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार से राष्ट्र व सर्व समाज कल्याण हेतु है।

आर्य समाज बुलन्दशहर में सत्संगभवन का उद्घाटन

१४ अप्रैल २०१८ को सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में सभा प्रधान डा० धीरज सिंह जी के करकमलों से सत्संग भवन का उद्घाटन हुआ जिसमें स्वामी जी का विशेष उद्बोधन हुआ श्री संजीव रामा प्रधान आर्यसमाज, सन्तोष राघव प्रबन्धक एवं श्रीमती अनिता भारद्वाज प्रधानाचार्या आर्य कन्या इण्टर कालेज बुलन्दशहर का व्यवस्था में विशेष योदान रहा।

विद्यालय की छात्राओं ने कार्यक्रम प्रस्तुत किये ये नगर के आर्यों ने भी अपनी उपस्थित से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई तथा भीमराव अम्बेडकर को भी याद किया गया पूर्व प्रबन्धक श्री शान्तिशरण राठी, सुनील आर्य, अनुराम शास्त्री शिवकुमार आर्य, अनिल कुमार आर्य, चन्द्रपाल आर्य, सुरेन्द्र आर्य, गौतम आर्य, मुकुट लाल आर्य, गिरीश आर्य सक्सेना खुर्जा आदि–आदि ने भाग लिया।

–अनुराग शास्त्री बु० शहर, संवाददाता

आर्य समाज पिलखुवा–वार्षिक सम्मेलन

२८. २९. ३०. अप्रैल २०१८ को आर्य समाज मन्दिर के प्रांगण में भव्य वार्षिक सम्मेलन का आयोजन किया गया शोभा यात्रा नगर में विशेष चर्चा का विषय रहा कार्यक्रम प्रातः मध्याह्न–रात्रि तीन सत्रों में चला सभामंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती का आशीर्वाद मिला श्री हरि शंकर अग्निहोत्री आगरा श्री पं० योगेशदत्त जी तथा गौरव शास्त्री के उपदेशों से आर्य जनता लाभान्वित हुई कार्यक्रम में स्याना से माता सुदेश आर्या उपप्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा उ०प्र० नरेन्द्र आर्य प्रधान समाज के नेतृत्व में २० लोग पहुंचे गढ़मुक्तेश्वर से अनिल आर्य के साथ २० आर्यों ने शोभा बढ़ाई जिले की ग्रमीण समाजों से भारी संख्या में आर्यों ने भाग लिया सन्यासियों की संख्या भी शोभयमान रही जिला मंत्री अशोक आर्य परिवार सहित व्यवस्था में लोग रहे।

प्रधान श्री सुभाष चन्द्र आर्य शान्ति स्वरूप आर्य पूर्व प्रधान के सुपुत्र हैं मन्त्री दिनेश आर्य पत्रकार हैं जो विजय कुमार आर्य कोषाध्यक्ष सभी ने मिलकर अतिथि सेवा की और उत्सव के चार चांद लगाये पुस्तक विक्रेता रहे।

–निरंजन सिंह अधिष्ठाता, वेदप्रचार

आर्य समाज हापुड़–वार्षिक सम्मेलन

२६, २७, २८ एवं २९ अप्रैल २०१८ को आर्य समाज मन्दिर प्रांगण में भव्य वार्षिक सम्मेलन का आयोजन किया गया २६ ता० ने शोभायात्रा निकाली मई पूज्य स्वामी आर्यवेश जी अध्यक्ष सर्वादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने उद्घाटन किया बीच–बीच में नए–नए विद्वान् उपदेशक आते रहे।

महिला सम्मेलन में प्रवेश आर्या पूनम आर्या रही अनिल आर्य दिल्ली से पधारे तीनों दिन आर्य जनता लाभान्वित हुई उसमें डा० विनय विद्यालंकार हल्द्वानी एवं डा० जयेन्द्र आचार्य गुरूकुल नोएड़ा तथा दिनेश आर्य पथिक अमृतसर का विशेष प्रभाव रहा हापुड़ क्षेत्र के आर्यों तथा ग्रामीण आर्य समाजों का केन्द्र है अतः सभी उत्सव होने की प्रतीक्षा करते रहते हैं प्रधान आनन्द प्रकाश्या आर्य तथा मन्त्री श्री विजेन्द्र आर्य का विशेष पुरूषार्थ है जिला सभा के प्रधान विकास आर्य–सुन्दरलाल आर्य कुवंर पाल आर्य, ओमप्रकाश आर्य, नरेन्द्र कुमार आर्य, राधा रमन आर्य रामपाल आर्य, परीक्षित आर्य, प्रेमपाल शास्त्री धर्मेन्द्र शास्त्री ने विशेष योगदान रहा ।

चरित्रवान् यशस्वी सन्तान का निर्माण आर्य समाज का लक्ष्य है

धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, सभा मंत्री

१३ मई रविवार–आर्य समाज का लक्ष्य है चरित्रवान यशस्वी सन्तान का निर्माण करना आदर्श परिवार और आदर्श समाज का निर्माण करना ये विचार आर्य समाज नगरिया परीक्षित के ३९वें वार्षिक सम्मेलन के समापन समारोह में आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० लखनऊ के मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती संचालक गुरूकुल पूठ–गढ़मुक्तेश्वर हापुड़, व्यक्त कर रहे थे। उन्होंने बताया भगवान् राम योगीराज श्री कृष्ण महर्षि दयानन्द जो भी महापुरूष्रा हुए है उनका निर्माण माता–पिता और गुरूजनों के पुरूषार्थ से हुआ है प्रत्येक माता की इच्छा होती है कि हमारी सन्तान यशस्वी होवे अपने उदाहरण देकर समझाया कि यज्ञ द्वारा ही संस्कारों का निर्माण सम्भव है क्षेत्र के श्री डा० अरूण कुमार जी ने मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए बताया कि नारी शिक्षा और कुरीतियों के उन्मूलन तथा रूढ़िवाद के खिलाफ आन्दोलन किया देश की आजादी के लिए आर्य समाज का मूल्यवान योगदान रहा है हमें आर्य समाज का सहयोग करना चाहिए।

अध्यक्षता श्री विजय बहादुर गौड़ ने की तथा संचालन विजय पाल आर्य ने किया श्री बलवान सिंह अध्यक्ष ने धन्यवाद दिया कार्यक्रम में धर्मवीर जी, विजयदेव, गोविन्द सिंह विष्ट अशोक सिंह गुप्ता विक्रम सिंह मांगेराम आर्य छोटे लाल गंगवार एन०के० वर्मा, रामपाल सिंह आर्य आदि–आदि ने आहुतियां प्रदान कर सबके कल्याण की कामना की।

अपना घर आश्रम का शुभारम्भ

सिखैड़ा–पिलखुवा–हापुड़

असहाय, बेसहारा, बीमार, मरणासन्न व्यक्तियों की चिकित्सा एवं सेवा के लिए मानव मात्र के कल्याण का संकल्प लेकर १० बीघा भूमि "अपना घर आश्रम" के नाम से अस्पताल का शुभारम्भ पिलखुवा के गणमान्य लोगों ने शुभारम्भ किया है जिसका शिलान्यास सभामन्त्री पूज्य स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी सरस्वती के कर कमलों द्वारा किया गया कार्यक्रम की अध्यक्षता हापुड़ आर्य समाज के मन्त्री बिजेन्द्र आर्य ने की तथा अशोक आर्य मन्त्री जिला आर्य प्रतिनिधि सभा का संयोजन में विशेष योगदान रहा।

श्री दीनानाथ गुप्त विजय खण्डेलवाल – संजय गोपल, बीना गोपाल अशोक गोयल, मुकेश जी सुभाष मित्तल, दिन शपत्रकार, विजय गोयल हापुड़, ब्रजमोहन भरत पुर राजस्थान, स्वामी नरसिंहानन्द जी यति महान् विभूतियों का सान्निध्य रहा कार्यक्रम की सफलता के लिए बहुत–बहुत शुभ कामनायें मा० सभा प्रधान डा० धीरज सिंह जी के प्रेषित की हैं और अपने वक्तव्य में कहा है कि मानव मात्र की सच्ची सेवा का यह प्रकल्प प्रभावित करता रहे।

–प्रदीप शास्त्री गुरूकुल पूठ (निजी संवाददाता)

दिनेश चौ० राकेश चौ० प्रो० अजीत सिंह आर्य पिलखुवा की माता जी के देहावसान पर शोक सभा–शान्ति यज्ञ

८ मई को प्रातः गुरूकुल पूठ में शान्ति यज्ञ सम्पन्न किया गया तत्पश्चात् उनके परिवार में शोक संवेदना व्यक्त करने सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती पिलखुवा स्थित आवास पर पहुंचे वहां धैर्य प्रदान किया उनके पिता श्री चौ० धर्मपाल सिंह जी को सान्तावना दी माता जी बड़ी वीरांगना थी। उनके परिवार में बहेड़ी बरेली में शेरों का पालन–पोषण होता था ऐसी वीरमाता के तीनों सुपुत्र योग्य एवं समाज सेवी हैं दिनेश जी घर एवं विद्यालय चलाते हैं राकेश जी भाजपा हापुड़ जिले के प्रभारी हैं एवं उपाध्यक्ष हैं तथा प्रो० अजीत सिंह हापुड़ कालेज में प्रवक्ता एवं गाजियाबाद भाजपा के प्रभारी हैं श्री सत्यपाल जी सांसद का पूरा आशीर्वाद है आर्य परिवार है क्षेत्र से लगभग ५–६ हजार लोग आये तथा शोक सभा का आयोजन हुआ जिसमें केन्द्रीय मन्त्री श्री जनरल बी०के० सिंह जी भी पधारे तथा प्रदेश–जिला स्तर के सभी नेता सभी पार्टियों से आये थे सभा मन्त्री धर्मेश्वरानन्द जी का प्रभावशाली उपदेश हुआ लोग प्रभावित हुए और आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की गई परिवार को दुःख सहन करने के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की शान्ति पाठ हुआ आर्य समाज के सभी सदस्य एवं पदाधिकारी भी वहां उपस्थित थे बरेली–बहेड़ी से विनीत चौ० परिवार सहित पधारे हापुड़ कालेज के प्रो० ए०के० अग्रवाल ने संयोजन किया बाद में प्रो० अजीत सिंह आर्य ने आर्य जनता का आभार व्यक्त किया।

–अशोक कुमार आर्य

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर/फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com

सेवा में
....
....

आर्य समाज के महोत्सव तथा आर्य वीरदल चरित्र निर्माण शिविर की सूचनाएँ

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् — ओ३म् — सारे संसार को आर्य बनाएँ!

प्रान्तीय आर्य वीर दल शिविर

03 जून 2018 से 10 जून 2018

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्द मठ, रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वावधान में प्रान्तीय आर्य वीर दल शिविर का आयोजन किया जा रहा है। आर्य समाज शिविरों के माध्यम से युवाओं को नशामुक्ति, चरित्र निर्माण, वैदिक संस्कार, ब्रह्मचर्य शिक्षा, राष्ट्रसेवा की भावनाओं को भरकर अनुशासित जीवन जीने की प्रेरणा देता है। अतः आप सभी से निवेदन है कि इस दूषित वातावरण में अपनी सन्तानों को सुसंस्कार देना चाहते है तो आप अपने बच्चों को इस शिविर में जरूर भेजें।

उद्घाटन समारोह
रविवार 03 जून 2018
प्रातः 10 बजे

समापन समारोह
रविवार 10 जून 2018
प्रातः 10 बजे

॥ओ३म्॥

आर्य वीरांगना दल, दिल्ली प्रदेश

(आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश के अन्तर्गत)
के तत्वावधान में

विशाल चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

स्थानः- एम.डी.एच. इन्टरनेशनल स्कूल, पॉकेट-3, सैक्टर-6, द्वारका, दिल्ली
दिनांकः- रविवार 3 जून 2018 से रविवार 10 जून 2018 तक

उद्घाटनः- 3 जून, रविवार सायं 4 बजे
समापनः- 10 जून, रविवार सायं 4 बजे

॥ओ३म्॥
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य समाज सीहोर का 87 वाँ वार्षिकोत्सव

दिनांक : 25, 26 एवं 27 मई 2018

कार्यक्रम
दिनांक : 25, 26 एवं 27 मई 2018
स्थान : ऋषि दयानंद वाटिका, आर्य समाज मंदिर, गंज सीहोर

"लौट चलो वेदों की ओर" ॥ओ३म्॥ "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"

विशाल युवा चरित्र निर्माण एवं संस्कार शिविर

आत्म रक्षा, स्वास्थ रक्षा, आध्यात्मिक उन्नति व राष्ट्र चेतना जागृत करने हेतु युवा बालक एवं बालिकाओं हेतु
पतंजलि युवा भारत एवं आर्य वीर दल राजस्थान द्वारा आयोजित पूर्ण आवासीय शिविर

दिनांकः 9 जून शनिवार से 15 जून शुक्रवार 2018 तक
स्थानः महेश वाटिका, सेक्टर नं. 5, गाँधी नगर, मोक्षधाम के पीछे, चित्तौड़गढ़ (राज.)
सम्पर्क सूत्रः 9571504383, 7014842912, 9057221321, 9462492122

ओ३म्

स्वामी आर्यवेश – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली
डा. धीरज सिंह आर्य – प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.
स्वामी धर्मेशवरा नन्द – मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.
आचार्य स्वदेश – वृन्दावन गुरूकुल, उ.प्र.
के सानिध्य में

कन्या-चरित्र निर्माण एवं योग शिविर

20 मई 2018 से 26 मई 2018 तक

-: आयोजक :-

धनश्याम दास सक्सेना (एड.)	रामस्वरूप आर्य	नरेन्द्र पाल वाधवा
अध्यक्ष	मंत्री	कोषाध्यक्ष
मो. 9412521189	मो. 941064736	मो. 9837092734

पूनम आर्य — प्रवेश आर्य

आर्य समाज बल्देवाश्रम, खुर्जा (बुलन्दशहर)

शिविर संयोजिका : श्रीमती शशी बाला प्रधानाचार्य, ए.के.पी. इंटर कॉलेज, खुर्जा – मो. 9690772435
सह शिविर संयोजिका : श्रीमती पुष्पांजलि शर्मा, गाइड कैप्टन-ए.के.पी. इंटर कॉलेज, खुर्जा – मो. 9411911957

अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु — ओ३म् — हमारे वीर विजयी हो

आर्य वीर दल गुरूग्राम

की ओर से आर्य वीरों एवं आर्य वीरांगनाओं का

शारीरिक एवं व्यक्तित्व विकास प्रशिक्षण शिविर

रविवार 3 जून 2018 से रविवार 10 जून 2018 तक

स्थान : आर्य वीर शिविर — आर्य विद्या मन्दिर सैक्टर 7 गुरूग्राम
स्थान : आर्य वीरांगना शिविर — आर्य समाज माडल टाऊन, गुरूग्राम

उद्घाटन समारोह–रविवार 3 जून 2018–सायं 6–00 बजे (आर्य समाज माडल टाऊन, गुरूग्राम)
समापन समारोह–रविवार 10 जून 2018–प्रातः 9–30 बजे (आर्य विद्या मन्दिर सैक्टर–7 गुरूग्राम)

आर्य वीर दल, सोनीपत के तत्वावधान में
वि.सं. 2075 ज्येष्ठ कृ0 पंचमी से ज्येष्ठ कृ0 एकादशी
रविवार, दिनांक 3 जून से रविवार, दिनांक 10 जून, 2018 तक
"चरित्र निर्माण एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर"
का आयोजन किया जा रहा है।
स्थान : डी0ए0वी0 एम0 पब्लिक स्कूल, सेक्टर–15, सोनीपत

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक – मुद्रक –प्रकाशक –श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है- सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।